७. प्रकृति संवाद

– रामदरश मिश्र

कुछ नहीं हो पा रहा है । समय ऐसे ही गुजरा जा रहा है । कभी गरदन का तनाव बेहद पीड़ित करता है, कभी दोनों कलाइयों में दर्द होने लगता है तो प्रकृतिस्थ नहीं रह पाता ।

रात भर दर्दों का आपस में संवाद होता रहता है, फिर भी न जाने किसकी दुआ है कि सो जाता हूँ । नींद आती रहती है, जाती रहती है और रह-रहकर टूटने के बावजूद उसमें लय बनी होती है ।

सुबह उठता हूँ तो थोड़ी ताजगी महसूस होती है । यदि सुबह को ठंडी हवा चल रही होती है तो तन-मन में ताजगी का स्पंदन महसूस होने लगता है । उठता हूँ तो सरस्वती जी घर के अनेक प्रभाती कार्य निपटा चुकी होती हैं और मुझे देखते ही चाय हाजिर कर देती हैं ।

नित्य कर्म से निवृत्त होकर और चाय पीकर आँगन और गैलरी में टहलने लगता हूँ । आज भी यही क्रम शुरू हुआ । सामने के बड़े गमले में गुंबद का आकार ग्रहण किए दवनों ने अपनी महक और हरीतिमा से मेरा मन अपनी ओर खींच लिया । मैंने उन्हें अपनी बाँहों में भर लिया । हथेलियाँ महक से गमगमा गईं । साँसों में महक गुनगुनाने लगी । शीतला माई के स्वागत में गाया जो गीत मैं बचपन में सुनता रहता था, वह मेरी यादों में जाग उठा, 'हमरे दुवरवाँ मइया दवना तरुववा हो'...एकाएक देखा कि पास के गमले में काली तुलसी जी मुसकरा रही हैं । 'प्रणाम माते' कहकर मैं उनके पास चला गया । कुछ देर उन्हें निहारता रहा और महसूस करता रहा कि मेरी रगों में उनका रस दौड़ रहा है । मेरी ही रगों में क्यों, पूरे परिवार की रगों में । 'ले लो' आवाज आई और मैंने आज की दवा के लिए कुछ पत्तियाँ उनसे माँग लीं । आँगन में स्थित पार्क की दुनिया बड़ी छोटी है । उसी में एक के बाद एक परस्पर पेड़-पौधे आलिंगित-से खड़े हैं । तुलसी से बतिया ही रहा था कि मीठी नीम ने हलके-से आवाज दी । उसने देखा, उसकी हरी-हरी पत्तियाँ हवा में हलके-हलके फरफरा रही थीं और वह फरफराहट मेरे भीतर उतर रही थी । उसने कहा, ''कई दिनों से मैं तुम्हारे चौके में नहीं गई । कढ़ी खानी छोड़ दी है, क्यों ?'' मैं हँसा-''नहीं-नहीं ऐसी बात नहीं है । हर चीज का अपना समय होता है न । तुम तो वैसे ही मुझे बहुत अच्छी लगती हो । पेट की बात छोड़ो, आँखों में तो तुम हरदम मोहक हरियाली बनकर छाई रहती हो ।''

चिड़ियाँ चहचहा उठीं । फिर समूह में फुर्र से उड़ीं और आकाश में पंखों व स्वरों की एक लय बन गईं, फिर वे लौट आईं । हाँ, उनके आश्रय की तरह

परिचय

जन्म : १९२४, गोरखपुर (उ.प्र.)
परिचय : डॉ. रामदरश मिश्र हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं । आपकी साहित्यिक प्रतिभा बहुआयामी है । आपने कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना और निबंध जैसी प्रमुख विधाओं में लेखनी चलाई है । साथ-साथ आत्मकथा, यात्रावृत्त तथा संस्मरण भी लिखे हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'पथ के गीत', 'पक गई है धूप', 'कंधे पर सूरज' (कविता संग्रह), 'हँसी ओठ पर आँखें नम हैं', 'तू ही बताए जिंदगी' (गजल संग्रह), 'स्मृतियों के छंद' (संस्मरण), 'पानी के प्राचीर', (उपन्यास), 'खाली घर', (कहानी संग्रह), 'बबूल और कैक्टस' (ललित निबंध) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत ललित निबंध में रामदरश मिश्र जी ने अपने घर के आँगन में स्थित पेड़-पौधों से बातचीत की है । पाठ में लेखक का पेड़-पौधों से लगाव, उनके प्रति अपनापन और अटूट रिश्ता दिखाया गया है ।

यह हरसिंगार का पेड़ कितना खुश हो रहा है । जैसे कह रहा हो,''आओ चिड़ियो, मेरी डाल-डाल पर फुदको और गाओ । आओ चिड़ियो, अपने मीठे-मीठे स्वरों से मुझे नहलाओ ।'' मैंने देखा, हरसिंगार नये पत्तों और टहनियों से लद गया है । जाड़े में खंखड़-सा हो जाता है और कभी-कभी डर लगता है कि यह सूख तो नहीं रहा है, लेकिन वसंत आते ही इसके भीतर सोई ऊर्जा जागने लगती है, प्राणरस छलकने लगता है और क्रमशः नई टहनियों तथा नये पत्तों के सौंदर्य से लद जाता है । मैं उसे देख रहा हूँ और लगता है, अब इसमें फूल आया, तब इसमें फूल आया । हाँ, यह हरसिंगार बहुत मस्त है । आषाढ़ में ही हलकी-हलकी हँसी उसमें फूटने लगती है, फिर शरद में तो कहना ही क्या ! तारों भरा आसमान बन जाता है । रात भर जगमग-जगमग करता रहता है और सुबह को अनंत फूलों के रूप में धरती पर बिछ जाता है । रात भर उसकी महक घर में टहलती रहती है । घर में ही क्यों, पास की गलियों और सड़कों पर भी वह घूमती-फिरती है और न जाने कितने लोगों की साँसों में बस जाती है । उसने अपनी महक से सबको खबर दे रखी है कि वह है, यहाँ है; यानी मेरे घर के आँगन में ।

''अरे वहीं अटके रहोगे, मुझसे बात नहीं करोगे ? चिड़ियाँ तो मेरे ऊपर भी खेलती हैं, गाती-चहचहाती हैं । फिर मेरी उपेक्षा क्यों ?'' ''नहीं-नहीं, अमरूद भाई, तुम्हारी उपेक्षा मैं कैसे कर सकता हूँ । तुम तो इस आँगन में हरसिंगार से पहले के नागरिक हो । दरअसल, तुम दोनों ने मिलकर जो रूप मंडप बनाया है, वह चिड़ियों का क्रीड़ा धाम है । तुम दोनों तो सटे हुए हो । चिड़ियाँ तुम्हारे ऊपर से उसके ऊपर, उसके ऊपर से तुम्हारे ऊपर आया-जाया करती हैं । उन्होंने तुम दोनों में कोई बँटवारा नहीं किया है और मैंने भी कहाँ किया है ? तुम दोनों का अस्तित्व हम सबके लिए कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण है । वसंत आते ही तुम्हारी भी विरल डालियाँ नई पत्तियों और टहनियाँ से सघन होने लगती हैं और हरसिंगार तो पावस में फूलना शुरू करता है न । तुम तो चैत लगते ही बौराने लगते हो । महकते हुए नन्हे-नन्हे, सफेद-सफेद फूलों से तुम्हारा वजूद जगमगा उठता है और छोटे-छोटे फल, फूलों के भीतर से बढ़ने-झाँकने लगते हैं । धीरे-धीरे तुम्हारे फलों में मिठास आने लगती है और आषाढ़ आते-आते चिड़ियों की चहचहाहट में तुम्हारे फलों की मिठास भर जाती है । वे तुम्हारी डाल-डाल पर नाच-नाचकर भोज महोत्सव मनाने लगती हैं और हम लोग भी तो तुम्हारे फलों का प्रसाद पाते रहते हैं । कितने बड़े-बड़े और मिठास भरे होते हैं तुम्हारे फल ।''

''अरे महाशय, मैं भी तो हूँ । इस पेड़ के नीचे हूँ तो क्या हुआ, हूँ तो ।'' ''अरे-अरे अड़हुल प्यारे, मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ ? लाल-लाल फूलों का मंगल कलश उठाए मेरे समय को रँगते रहते हो और मुझे एक प्यारी-प्यारी

फूलों से बनने वाली औषधियों की जानकारी अंतरजाल पर पढ़िए ।

'बढ़ती आबादी, कटते वन, प्रदूषण से प्रभावित होता जन जीवन' पर अपने विचार लिखिए ।

सुबह मिले, इसमें अपनी प्यारी भूमिका निभाते हो । आभारी हूँ दोस्त !'

देखा, कुछ दूर पर सहिजन झूम रहा था । जैसे बुला रहा है । 'आता हूँ भाई ! कहो कैसे हो ? तुम तो सदाबहार हो भाई ! और पेड़ तो वसंत में फूलते हैं, तुम तो बारहों मास सुगंध भरे फूलों से लदे रहते हो और उन फूलों पर मधुमक्खियाँ व भौंरे गुनगुनाया करते हैं । जाड़ों में जब मैं तुम्हारे पास धूप में बैठता हूँ, तब तुम्हारी मतवाली सुरभि से नहाता रहता हूँ । भीतर कविता गुनगुनाती है, बाहर तुम्हारे फूल और बारहों मास तुम फलियों से लदे होते हो। वे फलियाँ मेरे घर से लेकर पड़ोस तक अपना स्वाद बाँटती रहती हैं ।'

''आप ऊँचे लोगों को ही देखते रहेंगे ? हम छोटे हैं तो क्या,हम भी तो हैं ?''

देखो, बेला के फूल मुझे उलाहना दे रहे हैं और उनकी पंक्ति में कई-कई गमलों में तरह-तरह के फूल और पौधे विराजमान हैं । वे सभी मेरी ओर देख रहे हैं और जैसे संवाद को आतुर हैं । मैंने कहा, ''नहीं मेरे प्यारे फूलो, मैं तो स्वयं छोटा आदमी हूँ और छोटे लोगों के बीच ही जीवन यात्रा की है । उन्हें भरपूर प्यार दिया है और पाया है । तुम लोग तो मेरे परिवार के सदस्य हो । तुम्हारी आँखों में आँखें डालकर तुमसे हार्दिक संवाद करता रहता हूँ ।'' तीन गमलों में बेला के पौधे विराजमान हैं । वे सफेद-सफेद फूलों से जगमगा रहे हैं । फूलों से मादक सुगंध की हलकी-हलकी धारा बह रही है और मेरी साँसों में समा रही है । बेला इसी मौसम में फूलता है । एक साथ न जाने कितने फूल उसके भीतर से फूट पड़ते हैं । लेकिन क्या विडंबना है कि शाम होते-होते फूल मुरझा जाते हैं । रात को फिर दूसरे फूल खिलते हैं । इसलिए जब मैं सुबह-सुबह इनको नेत्रों में भर लेता हूँ । देर तक इनके पास खड़ा होता कि एक मुक्तक मेरे भीतर रेंगने लगता है-

''गुंचे, तेरी जिंदगी पर दिल हिलता,
बस एक तबस्सुम के लिए खिलता है ।
हँस के गुंचे ने कहा-मेहरबाँ,
यह तबस्सुम भी किसे कहाँ मिलता है ?''

कुछ पौधे तो चुपचाप मुसकरा रहे थे । एक पौधा खिल-खिलाकर हँस रहा था । खिल-खिलाते हुए बोला, ''कैसे हो दोस्त ?' सहिजन के ऊपर से आवाज गिलोय लता की थी । ''मुझे ही भूल गए दोस्त ।'' नहीं मेरी गिलोय बहना, मैं आते-जाते देखता ही रहता हूँ और तुम्हारी हरी-हरी फलियाँ मेरी आँखों को सुख देती हैं । एक तुम्हीं तो हो जो कहती है -''शरीर में कोई भी विकार उत्पन्न हो, घबराना नहीं ।'' बातें करते-करते गेट आ गया । गिलोय ने कहा-''ठीक है, जाओ, घूम आओ ।'' जब मैं गेट से बाहर निकला तब मैं भरा-पूरा अनुभव कर रहा था ।

— ० —

'वनभोज' महोत्सव का आयोजन कब, क्यों और कहाँ किया जाता है, इसके बारे में बड़ों से सुनिए तथा कक्षा में सुनाइए।

'प्रकृति हर पल नया रूप धारण करती है' इससे संबंधित अपने आस-पास के उदाहरणों को देकर अपने मित्रों से संवाद कीजिए ।

शब्द संसार

स्पंदन पुं.सं. (सं.) = रह-रहकर धीरे-धीरे हिलना या काँपना, धड़कन
निवृत्त वि.(सं.)= अवकाश प्राप्त, मुक्त होकर
हरीतिमा स्त्री.सं.(सं.)= हरियाली
अस्तित्व पुं.सं.(सं.) = विद्यमानता, होने का भाव
सहिजन पुं.सं.(सं.) = एक वृक्ष; जिसकी लंबी फलियों की तरकारी बनती है ।
उलाहना स्त्री.सं.(सं.)= शिकायत
विडंबना स्त्री.सं.(सं.)= हँसी, उपहास
गुँचा पुं.सं.(फा.) = कली
मेहरबाँ वि.(फा.)= कृपालु
तबस्सुम स्त्री.सं(अ.)= मुस्कान
विकार पुं.सं.(सं.) = दोष, प्रकृति, मनोवेग

मुहावरे

यादों में जाग उठना = पुरानी यादें ताजा हो जाना
भरा-पूरा अनुभव करना = संतुष्ट हो जाना

स्वाध्याय

❊ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

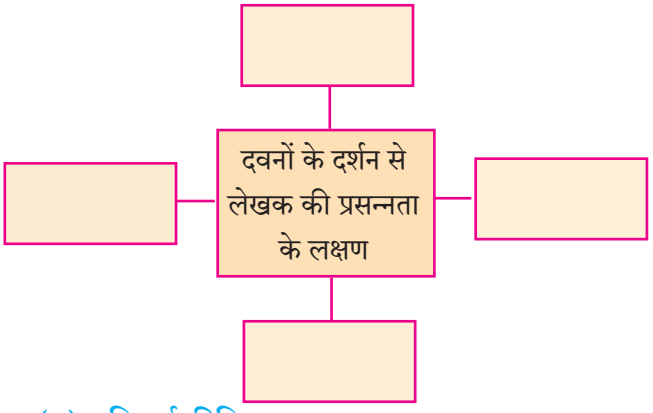

(२) पाठ में आई वनस्पतियों का वर्गीकरण कीजिए :

अ.क्र	लताएँ	पौधे	वृक्ष

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

हरसिंगार में ऋतुओं के अनुसार होने वाले बदलाव

वसंत	
शरद	

(४) उपसर्ग, प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाइए :

उपसर्ग	शब्द	प्रत्यय युक्त
--------	भाग्य	--------
--------	बल	--------
--------	प्रभाव	--------
--------	ज्ञान	--------

(५) कृति पूर्ण कीजिए :

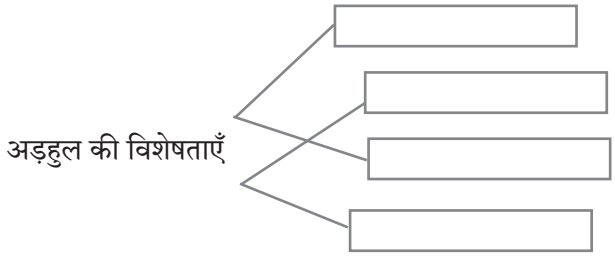

(६) क्रमानुसार ऋतुओं के नाम लिखिए :

१	वसंत
२	
३	
४	
५	
६	

CWH1LF